शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

भारतीय शिल्पकारों का सामाजिक व आर्थिक उत्थान,अध्ययन, विश्लेषण व नीतिगत सुझाव एक शोध, सर्वेक्षण रिर्पोट

- डॉ. हृदेश गुप्ता

रीडर, चित्रकला विभाग, डी. ए-वी, कॉलेज, कानपुर, उ.प्र.

www.shodh.net

भारतीय शिल्पकारों का सामाजिक व आर्थिक उत्थान, अध्ययन, विश्लेषण व नीतिगत सुझाव एक शोधा, सर्वेक्षण रिर्पोट

- डॉ. हृदेश गुप्ता

भारत अनेक प्रकार की विभिन्नताओं वाली संस्कृतियों का पारंपरिक देश है। हमारी संस्कृति अस्मिता बहुविधा होते हुए भी एकात्मक है। इसके विशाल भू-भाग पर आदिवासी एवं आंचलिक स्तर की परम्परागत बोली-भाषा, आचार-व्यवहार, खान-पान, पहनावा और रीति-रिवाज वाली भिन्न-भिन्न किन्तु एकीकृत प्राचीन जीवन्त संस्कृति देखने को मिलती है। कला का सम्बन्ध संस्कृति से है। स्थान भेद के अनुसार कला में पर्याप्त विविधता है। इस विविधता के बल पर कला समाज में संरक्षित होती रहती है। परंपरागत समाज में कला और शिल्प सामाजिक जीवन का आने वाला हिस्सा है। बदलते सामाजिक परिदृश्य में परंपरागत अस्मिता व्यावसायिक होती जा रही है। अति व्यावसायिकता और जड़-आर्थिक सोच के कारण आज यह संस्कृति दम तोड़ रही है। विकसित होती अर्थव्यवस्था और भूमण्डलीकरण की नीति के कारण पाश्चात्य जगत् का उपभोक्तावाद भारत की आंचलिक शिल्पकला को आत्महत्या करने के लिए विवश कर रहा है। वर्तमान तकनीकी बढ़त से न जुड़ पाने के कारण हमारी प्राचीन और परम्परागत शिल्पकला पहले तो प्रतिस्पर्धा में पिछड़ी और फिर आर्थिक दबाव के कारण पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्राप्त शिल्प को त्यागने के लिए विवश हो रहा है और अब नौकरी की तलाश में घर से बेघर हो रहा है। इस बदलते परिप्रेक्ष्य में कला और शिल्प से जुड़े कलाकारों के समक्ष जीविका का संकट खड़ा है इसी संकट ने मुझे इस विषय पर कार्य करने की ओर प्रेरित किया।

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के अनुमोदन से प्राप्त शिल्पकला एवं शिल्पकारों के सर्वेक्षण में ऐसे तथ्य सामने आए हैं जो यह स्पष्ट करते हैं कि देश में शिल्पकला और शिल्पकारों का जीवन आज के सामाजिक एवं आर्थिक ढाँचे में एक असहाय प्रतियोगी होकर अपनी अमूल्य सांस्कृतिक धरोहर के अस्तित्व के लिए सम्भवत: संघर्ष कर रहा है। विभिन्न स्थानों व विभिन्न क्राफ्ट मेलों, दिल्ली हॉट, शिल्प संग्रहालय, नई दिल्ली, अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार मेला, प्रगति मैदान, नई दिल्ली, सूरज कुण्ड, हरियाणा लखनऊ महोत्सव, वृदावन, मथुरा, जम्मू, हिमांचल प्रदेश, मधुबनी, पटना, इलाहाबाद, बनारस, चित्रकूट, आगरा, गोरखपुर, नैनीताल, अल्मोड़ा, आदि-आदि जगहो में जा कर विभिन्न विधाओं के शिल्पकारों से मिलकर साक्षात्कार लिए, उनकी समस्याओं से अवगत हुआ, विचार जाने, उनके समाजिक व आर्थिक जीवन के विभिन्न पहलुओं को समझा।

राजस्थान के कठपुतली शिल्पकार रामपाल, अनिल भट्ट, विनोद भट्ट तथा चमनलाल मेलों-मेलों जाकर किसी प्रकार अपनी आजीविका चला रहे हैं। उड़ीसा की पट-चित्रकला से जुड़े अजयकुमार महापात्र अपने शिल्प को केवल इसलिए अपनाए हैं क्योंकि उन्हें और कुछ काम आता ही नहीं है। वृन्दावन की गोल्डेन पेण्टिग बनाने वाले राजकुमार गोस्वामी और नवलकिशोर गोस्वामी अपने चित्रों के ग्राहक नहीं ढूँढ पा रहे हैं। आगरा के स्टोन कार्विंग के शिल्पकार मुरारीलाल, जगदीश सैनी तथा डब्बू और मुरादाबाद के ब्रास कलाकार महाबीर सिंह और मोहम्मद उस्मान एजेण्टों के सहारे जीवित हैं और उन्हें अपने शिल्प के बदले किसी प्रकार दैनिक मजदूरी ही मिल पाती है। वृन्दावन की धातुशिल्प के कलाकार जगदीश प्रसाद, सोनू और तुलसीराम अपने कार्य को ठीक-ठाक ही कह पाते हैं। मथुरा की सांझी-पेपरकट कलाकार विजय वर्मा तथा संजयवर्मा इस कला से पेट तक भरने में असमर्थ हैं और उनकी अगली पीढ़ी इस कला को नहीं अपनाएगी। उत्तर-प्रदेश के खिलौना कलाकार रविप्रकाश गोला, संजय, भिक्खूराम तथा रामजियावन के अनुसार उनके शिल्प को वैज्ञानिक और तकनीकी खिलौनों की तुलना में कोई पसन्द नहीं करता। रानीखेत, उत्तराखण्ड के काष्ठ-कलाकार हेमचन्द्र और विनोद सिंह का मत है कि पारम्परिक कृतियों की मांग बिल्कुल नहीं है और परिवर्तन के इस युग में स्पर्धा भी अत्यधिक कठिन है। नैनीताल, उत्तराखण्ड के मोम-शिल्पकार अनिल, बलवन्तशाह तथा पंकज मंहगाई की मार से पीड़ित हैं। कर्नाटक में विदरीवर्क के शिल्पकार मोहम्मद उस्मान अभी तो संघर्षशील है और कहते हैं कि दिक्कतें तो सभी व्यवसायों में हैं। हरियाणा में टेराकोटा के कलाकार अमरसिंह प्रजापति समय-समय पर होने वाले मेलों को ही अपने शिल्प का आधाार मानते हैं। जयपुर, राजस्थान में मिनीएचर पेण्टिग के गोपाललाल

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN
ISSN 2249-9180 (Online)
ISSN 0975-1254 (Print)
RNI No.: DELBIL/2010/31292

Bilingual journal of Humanities & Social Sciences

Half Yearly

Vol-1, Year-1,

15 Jan-2010

भारतीय शिल्पकारों का सामाजिक व आर्थिक उत्थान,अध्ययन, विश्लेषण व नीतिगत सुझाव एक शोध, सर्वेक्षण रिर्पोट

- डॉ. हृदेश गुप्ता

रीडर, चित्रकला विभाग, डी. ए-वी, कॉलेज, कानपुर, उ.प्र.

www.shodh.net

शर्मा का कथन है कि मौलिक कृतियों की समझ न तो कलाकारों को है और न ही उनकी माँग है। वह तो नकल से ही गुजारा करते हैं। चन्दन-शिल्प में लगे जयपुर के दीपक कुमावत तथा दिनेश कुमावत विदेशी पर्यटकों के भरोसे अपनी गाड़ी खींच रहे हैं। मधुबनी, बिहार के अमरकान्त झा की शिकायत है कि सरकारी मेलों में कुछ चुने हुए कलाकारों को ही बार-बार मौका मिलता है। ग्वालियर, मध्य प्रदेश की पेपर मैसी शिल्पकला के कल्लू प्रजापति के अनुसार यदि बैंकों से ऋण के अनुकूल व्यवस्था हो जाय, तो कुछ अच्छा हो सकता है। सहारनपुर की वुडकार्विन कला के मंसूर खां को मेहनत के हिसाब से पैसे नहीं मिलते। चित्रकूट में लकड़ी के खिलौने के कलाकार इन्द्रपाल सिंह का कथन है कि प्लास्टिक के खिलौने ने उनके शिल्प की कमर ही तोड़ दी है और वह अपने बच्चों को यह कला नहीं सिखा रहे हैं।

उपर्युक्त निष्कर्षों को ध्यान में रखकर आज आवश्यकता यह है कि गांव-गांव और कस्बों-कस्बों के स्तर पर शिल्पकला और इसके कलाकारों को सरकारी संरक्षण एवं सहायता दी जाये। पारंपरिक मेलों के घटते चलन को देखते हुए सरकारी शिल्प मेलों में पारदर्शिता बरती जाए और निरक्षर शिल्पकारों को एजेण्टों तथा बिचौलियों के शोषण से बचाने के लिए बड़े-बड़े आधुनिक मॉल संस्कृति एवं इण्टरनेट पर आंचलिक शिल्पकला के लिए शिल्पकारों के हित को प्राथमिकता देते हुए सीधे व्यापार से जोड़ दिया जाए। सरकारी क्राफ्ट मेलों में प्रत्येक शिल्पकार को सहभागिता का पर्याप्त, प्रत्यक्ष व सामन अवसर मिलें। निर्यात व्यापार में कुछ चुने हुए नहीं बल्कि सभी शिल्पकारों की भागीदारी सुनिश्चित की जाए। व्यावसायिक नीति के शोषण से बचाकर सम्मान और गौरव की भावना के साथ शिल्प का पोषण मुखर होकर किया जाए। जरूरत है शिल्पकार की तुलना एक मजदूर अथवा बेरोजगार के साथ न करके, उसके प्रति निष्ठा, समर्पण और श्रद्धा को, सामाजिक जीवन का अंग बनाया जाय।

वृहत् शोध परियोजना प्रतिवेदन
(विश्वविद्यालय अनुदान आयोग, नयी दिल्ली)

शोध संचयन
SHODH SANCHAYAN